चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

1 से 15 अगस्त, 2024 तक कपास की खेती के लिए सुझाव

सस्य क्रियाएँ

- कपास की फसल में अधिक बरसात के बाद पानी निकासी का प्रबंध अवश्य करें अन्यथा कपास की फसल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।
- जिन किसान भाइयों ने अभी तक कोई खाद नहीं डाली है वह खेत को बतर आने पर कपास में एक बैग डीएपी एक बैग यूरिया आधा बैग पोटाश व 10 किलो जिंक सल्फेट 21 प्रतिशत वाली प्रति एकड़ के हिसाब से अवश्य डालें।
- बी. टी. कपास की फसल में 90 से120 दिन के बीच 2: यूरिया, 0.3: जिंक सल्फेट (33:) का 10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।
- रेतीली मिट्टी में खाद की मात्रा दो बार में डालें।
- अगर रेतीली मिट्टी में मैग्नीशियम की कमी के लक्षण हैं तो आधा परसेंट मैग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव भी अवश्य करें।
- ड्रिप विधि के द्वारा लगाई गई कपास में हर सप्ताह ड्रिप के द्वारा घुलनशील खाद; जिसमें दो पैकेट 12:61:0 के, तीन पैकेट 13:0:45 के, 6 किलो यूरिया व 100 ग्राम जिंक प्रति एकड़ के हिसाब से 10 हफ्तों तक अवश्य डालें।

कीट प्रबंधन

- कपास की फसल में रस चूसने वाले कीटो की निगरानी हेतु प्रति एकड़ 20 पौधों की तीन पत्तियों (एक ऊपर, एक मध्यम एवं एक निचले भाग से) पर सफेद मक्खी, हरा तेला एवं थ्रिप्स (चूरड़ा) की गिनती साप्ताहिक अंतराल पर करें।
- सफेद मक्खी, हरा तेला एवं थ्रिप्स का आर्थिक कगार क्रमशः 18 से 24 वयस्क, 6 शिशु एवं 30 थ्रिप्स (चूरड़ा) प्रति 3 पत्तियां है। कीटों की संख्या आर्थिक कगार से ऊपर पहुंचने पर ही सिफारिश किए गए कीटनाशकों का छिड़काव करें।
- **अगस्त माह में हरा तेला एवं सफ़ेद मक्खी के बढ़ने की सम्भावना हैं।**
- हरा तेला का प्रकोप होने पर 40 मिलीलीटर इमिडाक्लोप्रिड (कॉन्फीडोर) 200 एस.एल. या 40 ग्राम थायामिथॉक्साम (एकतारा) 25 डब्लू.जी. को 150 से 175 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें ।
- सफ़ेद मक्खी के आर्थिक कगार पर पहुंचने पर 300 मिलीलीटर डाईमेथोएट (रोगोर) 30 ई.सी. / ऑक्सीडेमेटोन मिथाइल (मेटासिस्टोक्स) 25 ई.सी. के साथ 1 लीटर नीम आधारित कीटनाशक (नीमबीसीडीन/अचूक) या 400 मिलीलीटर पाइरिप्रोक्सिफ़ेन (डायटा) 10 ई. सी. या 240 मिलीलीटर

स्पिरोमेसिफेन (ओबेरोन) 22.9 एस. सी. को 200 से 250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से 10 से 12 दिनों के अंतराल पर आवश्यकतानुसार बारी–बारी से छिड़काव करें। पाइरिप्रोक्सिफ़ेन व स्पिरोमेसिफेन सफ़ेद मक्खी की शिशु (निम्फ) अवस्था के प्रति काफी प्रभावी हैं।

- हरा तेला एवम् सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर फ्लोनिकामिड (उलाला) 50 घु. द. की 60 ग्राम मात्रा या एफिडोपग्रोपेन (सेफिना) 50 डी. सी. की 400 मिलीलीटर मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ स्प्रे करें।
- कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी फूलों एवं टिन्डों पर करें। फलीय भागों पर 5-10% से अधिक प्रकोप इसका आर्थिक कगार है। गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं। मध्य अगस्त तक लगातार तीन रातों में गुलाबी सुंडी के 12-15 प्रौढ़ प्रति ट्रैप आने पर या 20 टिन्डों में एक से दो टिंडे गुलाबी सुंडी के कारण ग्रसित मिलने पर सिफारिश किए गए कीटनाशकों का छिड़काव करें।
- पिछले सप्ताह किए गए सर्वे में गुलाबी सुंडी का प्रकोप फूलों एवं टिन्डो में पाया गया है। अतः इस माह गुलाबी सुंडी के लिए 3 मिलीलीटर प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. या 4 मिलीलीटर क्विनल्फॉस 20 ए.एफ. या 1.5 ग्राम थायोडिकार्ब 75 डब्लू. पी. प्रति लीटर पानी की दर से 8 से 10 दिनों के अंतराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।
- कपास की फैक्ट्री एवं कपास खली के मीलों में गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के उचित उपाय किए जाएं।
- कपास की फसल में किसी भी ज्यादा जहरीले कीटनाशक या बिना सिफारिश किये गए कीटनाशकों के मिश्रण का प्रयोग ना करें ।

रोग प्रबंधन

- पैराविल्ट के लिए किसान भाई लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें। परंतु पौधे सूख जाने पर दवा का असर नहीं होगा ।
- जीवाणु अंगमारी रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें।
- जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें, ताकि बीमारियो को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 100 से 200 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें ।
- जड़ गलन रोग के लिए दवाई डालते समय किसान भाई पीठ वाले स्प्रे पंप का प्रयोग करते समय मोटे फव्वारे का प्रयोग करके जड़ों के पास इस फफूंदनाशक घोल को डालें।

- टिंडा गलन रोग नियंत्रण के लिए 2 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी के हिसाब से, सुंडी के लिए सिफारिश किये गए कीटनाशक के साथ मिलाकर स्प्रे करें।
- पत्ती मरोड रोग के कारण नसें मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाना आदि लक्षण दिखाई देते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें।

अन्य सलाह

- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विभाग द्वारा समय समय पर जारी मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर ही कीटनाशकों एवं फफूंदनाशकों का प्रयोग करें।

इसके अतिरिक्त कोई भी संशय होने पर निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

8002398139 7015105638 9812700110 9416530089 9041126105 9992911570 8901047834

कपास अनुभाग

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय हिसार